44

जोड़ नहीं बनता!

(13:18)

यूहन्ना ने कहा कि झूठे भविष्यवक्ता ने सबके ''दाहिने हाथ या उन के माथे पर एक एक छाप करा'' देनी थी और यह कि उसने आदेश देना था कि ''उसको छोड़ जिस पर छाप अर्थात उस पशु का नाम या उसके नाम का *अंक* हो, और कोई लेन देन नहीं कर सकता था'' (13:16ख, 17)। आगे इस प्रेरित ने कहा, ''ज्ञान इसी में है, जिसे बुद्धि हो, वह इस पशु का अंक जोड़ ले, क्योंकि वह मनुष्य का अंक है और उसका अंक *छह सौ छियासठ* है'' (आयत 18)।

विलियम बार्कले के अनुसार, ''धर्म-शास्त्र की किसी भी अन्य आयत से इस आयत पर अधिक निपुणता बरती गई है।''[1] राबर्ट मुल्होलैंड ने कहा है, ''संदेह होता है कि अंक की पहेली के 666 से अधिक, कुछ निपुण, कुछ चतुर और कई अविश्वसनीय समाधान हो सकते हैं।''[2]

मामले को और उलझाने के लिए कुछ हस्तलिपियों में इसका एक और रूप 616 मिलता है। 666 या 616 अंक का क्या महत्व है? इस प्रस्तुति में हम दिए जाने वाले कुछ सुझावों की समीक्षा करते हुए इस अंक के ठोस, तर्कसंगत अर्थ का प्रस्ताव रखेंगे।

कुछ असामान्य व्याख्याएं

प्रकाशितवाक्य के सतत ऐतिहासिक ढंग को मानने वाले टीकाकारों[3] ने इस अंक को समय का काल अर्थात 666 वर्षों का महत्वपूर्ण काल बनाने की कोशिश की है। इस अन्तराल की व्याख्याएं करते हुए वे मूर्तिपूजा, कैथोलिकवाद और मोहम्मदवाद को शामिल करते हैं। इस विचार के प्रति कई आपत्तियों में यह बात भी है कि लोगों ने विश्वास की इन सभी पद्धतियों को 666 वर्षों से अधिक समय तक माना है।[4]

एक असामान्य विचार यह है कि यह अंक ''शैतान के मसीहा'' को दर्शाता है। यह निष्कर्ष ''666'' को लिखने के निम्न रूप करने से निकाला जाता है:

χξς

तीनों में से पहला संकेत यूनानी अक्षर ''chi'' है, जिसका अर्थ ''600'' हो सकता है। (इसकी व्याख्या मैं थोड़ी देर में करूंगा।) दूसरा अक्षर ''xi'' है, जो ''60'' को दर्शाता हो सकता है। तीसरा ''sigma'' है जो ''6'' के लिए हो सकता है। इस प्रकार तीन यूनानी

अक्षरों का जोड़ 666 बनता है। इस काल्पनिक ढंग का इस्तेमाल करने वाले यह ध्यान दिलाते हैं, कि ''chi'' (खाई) ''ख्रिस्त'' के लिए शब्द हो सकता है और ''sigma'' (सिग्मा) उस शब्द का अन्तिम अक्षर है।[5] इन दोनों के बीच में "xi" अक्षर है, जो (उनके अनुसार) मुड़े हुए सांप जैसा लगता है। इसलिए उनका सुझाव है कि यह अंक बाहर से ख्रिस्त (मसीहा) की और भीतर से सांप (शैतान) की आकृति है, जिस कारण इसे शैतान का मसीहा कहा जाता है। बहुत सी आपत्तियों में जो इस अवधारणा पर लगाई जा सकती हैं, एक यह है कि यूनानी धर्म-शास्त्र में, 666 को χξς (chi-xi-sigma) नहीं, बल्कि εξακοσιοι εξηκοντα εξ (हेक्साकोसियोई हेक्सेकोन्टा हेक्स अर्थात छह सौ छियासठ) लिखा गया है।

एक प्रसिद्ध ढंग

एक अधिक संवेदनशील अवधारणा, जिसकी कई टीकाकार वकालत करते हैं यह है कि 666 से किसी व्यक्ति के नाम या उपाधि का पता चलता है। इस ढंग का इस्तेमाल करने वाले हमें यह आश्वस्त करते हैं कि ''उसके नाम का अंक'' और ''मनुष्य का अंक'' (13:17, 18) वाक्यांश कोई संदेह नहीं रहने देते कि पवित्र आत्मा के मन में कोई विशेष व्यक्ति था। (कोई अनिश्चित उप-पद नहीं है, जिस कारण दूसरे वाक्यांश का अनुवाद ''यह अंक मनुष्य [या मनुष्यजाति] का है'' हो सकता है।[6])

यह ढंग *gematria* कही जाने वाली प्राचीन संख्यात्मक प्रासंगिकता अर्थात ''किसी शब्द के अक्षरों का ऐसे इस्तेमाल करना, जिससे उनके जोड़ से उस नाम का पता चलता हो'' पर आधारित है।[7] यूहन्ना के समय में लोग अरबी अंकों (1, 2, 3 ...) का इस्तेमाल नहीं करते थे। रोमी लोग रोमी संख्याओं का इस्तेमाल करते थे, जबकि यूनानी और इब्रानी लोग अपनी वर्णमालाओं के प्रत्येक अक्षर की विशेष संख्या को महत्व देते थे। यूनानी वर्णमाला में, ''अल्फा'' का मूल्य 1, ''बीटा'' का 2, ''गामा'' का 3 और इसी प्रकार अगले अक्षरों का मूल्य निर्धारित होता था।[8] यह कल्पना करने के लिए कि हिन्दी भाषा में यह कैसा लगेगा, मान लीजिए कि ''क'' का मूल्य 1 है, ''ख'' का 2, ''ग'' का 3 और इसी प्रकार अगले अक्षरों का। आपको यह अजीब लग रहा होगा; परन्तु यदि आपने रोमी अंकों का इस्तेमाल किया हो,[9] तो आपको पता होगा कि कौन सा अक्षर किस अंक के लिए इस्तेमाल होता है: ''I'' का इस्तेमाल 1 के लिए, ''V'' का इस्तेमाल 5 के लिए, ''X'' का इस्तेमाल 10 के लिए और इसी प्रकार अन्य अक्षरों का इस्तेमाल होता है।

जिमेट्रिया का इस्तेमाल करते हुए सिल्बीलाइन ओरेकल्स[10] ने दिखाया कि ''यीशु'' के यूनानी शब्द (*Ιεσονς*) का जोड़ 888 हो सकता है:

I (''अयोटा'')	=	10
η (''एटा'')	=	8
σ (''सिग्मा'')	=	200

ο (''उमिक्रोन'')	=	70
υ (''उप्सिलोन'')	=	400
σ (''सिग्मा''[11])	=	200
जोड़	=	888

यूनानी लोग *जिमेट्रिया* का इस्तेमाल मुख्यतया खेल के रूप में करते थे। एक खिलाड़ी नाम को संख्या में बदल देता,[12] वह संख्या शेष खिलाड़ियों को देता और फिर उन्हें यह पता लगाने के लिए कहा जाता था कि वह व्यक्ति कौन है। उदाहरण के लिए A-B-C पद्धति का इस्तेमाल करते हुए, अंग्रेज़ी शब्द ''David'' नाम का जोड़ 40 हो जाएगा (जहां D=4, A=1, V=22, I=9, D=4)। एक खिलाड़ी को ''40'' संख्या दी जाती है और उसे मूल नाम का पता लगाने के लिए कहा जाता था।

इस खेल की कठिन बात यह है कि नाम को संख्या में बदलना तो आसान है (जैसे ''David''=40), परन्तु निकली संख्या को वापस मूल नाम में बदलना कठिन है। A-B-C पद्धति का इस्तेमाल करते हुए, अन्य कई नामों की तरह "Linda" (12+9+14+4+1) का जोड़ भी 40 बनता है। किसी भी संख्या के असंख्य ''सही उत्तर'' हो सकते हैं, जिस कारण भाग लेने वाले के लिए यह जानने का कि वह ''जीत गया'' केवल एक ही ढंग था कि पहेली बुझाने वाला कहे कि यह ''सही है!'' हम यदि यह खेल खेलना चाहते हैं, तो हमें मूल नाम का तभी पता चल सकता है यदि इसे प्रेरित ने बताया हो, यानी ''सही उत्तर के लिए पृष्ठ 60 देखें'' जैसा कोई नोट जोड़ा हो।

तौ भी कई टीकाकारों का यह विश्वास है कि यूहन्ना *जिमेट्रिया* का इस्तेमाल कर रहा *था* यानी अपने पाठकों को वह एक पहेली बुझा रहा था। ऐसे ही कई पृष्ठों तक मैं इसी विचार के साथ चलते हुए संख्या का खेल खेलता रहूंगा। पूरा होने से पहले, पौलुस की तरह ही मैं भी ''पागल के समान कहता'' लग सकता हूं (2 कुरिन्थियों 11:23; KJV)। मेरी मूर्खता को सह लें, क्योंकि मेरा उद्देश्य बहुत संजीदा है।

प्रकाशितवाक्य 13:18 के सम्बन्ध में *जिमेट्रिया* का पहला उल्लेख 185 ईस्वी के लगभग इरेनियुस के लेखों में मिलता है।[13] इरेनियुस ने तीन नामों या पदों का उल्लेख किया जो 666 तक बनते हैं।

एक तो यूनानी शब्द *Euanthas* था, जिसका अर्थ हमारे लिए कुछ नहीं है। शायद यह उस समय के प्रसिद्ध व्यक्ति का नाम था।

एक यूनानी शब्द *Lateinos* है, जिसका अर्थ ''लातीनी पुरुष'' या ''लातीनी वस्तु'' (कई बार इसका अर्थ ''लातीनी राज्य'' या ''लातीनी साम्राज्य'' निकाला जाता है) हो सकता है।[14] (अपनी व्याख्या को सरल बनाने के लिए इसके आगे मैं यूनानी या इब्रानी अक्षरों के अंग्रेज़ी शब्दों का इस्तेमाल करूंगा।)

L	=	30
a	=	1
t	=	300
e	=	5
i	=	10
n	=	50
o	=	70
s	=	200
जोड़	=	666

उसका तीसरा उदाहरण *Teitan* था (जो रोमी सम्राट "Titus" का वैकल्पिक शब्द-जोड़ हो सकता है):[15]

T	=	300
e	=	5
i	=	10
t	=	300
a	=	1
n	=	50
जोड़	=	666

इरेनियुस ने यह कहते हुए कि ''यदि लेखक हमें नाम बताना चाहता, तो उसने इसे पूरा लिख देना था'' तीनों के बीच निर्णय लेने से इनकार कर दिया।[16]

अन्य सम्भावनाएं दी गई हैं, परन्तु हाल ही के वर्षों में इस ''गुप्त संदेश'' के लिए अधिक प्रसिद्ध पात्र कुख्यात नीरो है। कई टीकाकारों ने स्पष्ट तौर पर कहा है कि 666 नीरो का अंक ही है। नीरो के नाम को 666 के बराबर बनाने के लिए, ''कैसर'' के उसके पद को मिलाना, उसके नाम का परिवर्तन इस्तेमाल करना और फिर उसके नाम और पद को इब्रानी में बदलना आवश्यक है। उसका परिणाम इस प्रकार है।

N (''नून'')	=	50
e	=	0[17]
r (''रेश'')	=	200
o (''वाव'')	=	6
n (''नून'')	=	50

K (''काफ़'')	=	100
a	=	0
i	=	0
s (''सामेख'')	=	60
e	=	0
r (''रेश'')	=	200
जोड़	=	666

इस विचार को मानने वालों का विश्वास है कि निर्णायक दलील यह है कि अन्तिम "n" (''नून'') को "Neron" रहने देने पर, अक्षरों का जोड़ 616 तक जाता है, जो लिखे हुए का वैकल्पिक पाठ है। उनके शब्दों में, यह कहना कि ''और कौन सा नाम है, जिसका जोड़ 666 और 616 बनता है?'' आपको हैरान कर सकता है।

यह मानने वालों से कि 666 (या 616) नीरो का अंक/नाम है, मुझे लड़ना नहीं है। इस निष्कर्ष से लिखे हुए की कोई हानि नहीं होती है न ही यह अन्य वचनों के विपरीत है और संदर्भ से मेल भी खाता है।[18] तौ भी इस ढंग के प्रति मेरी सोच के अलावा इस निष्कासन के साथ मुझे कुछ दिक्कतें हैं: (1) शब्दों के जोड़ को बदलना और पद जोड़ना या अन्य विकल्प बनाना क्यों आवश्यक है? (2) यूनानी के बजाय इब्रानी का इस्तेमाल क्यों?[19] जी. बी. केयर्ड ने कहा है, ''यूहन्ना तो यूनानी में लिख रहा था और वह अपने पाठकों के इब्रानी वर्णमाला के ज्ञान की गिनती भी नहीं कर सकता था।''[20] (3) सबसे महत्वपूर्ण यदि यह व्याख्या उतनी स्पष्ट है, जितनी कइयों को लगती है तो प्रकाशितवाक्य की प्राचीन व्याख्याओं में से किसी को इस समाधान का पता क्यों नहीं था? ''उदाहरण के लिए, इरेनियुस ने ... 666 के अर्थों वाले कई विचार दिए, परन्तु सम्भावनाओं में उसने नीरो का नाम शामिल भी नहीं किया, केवल उसे ही उम्मीदवार के रूप में देखें।''[21]

''पहेली'' के और ''हल'' भी हैं: एक लेखक ने सम्राट के नामों (यूनानी में) के पहले अक्षर जूलियस सीज़र से वेसपेनियन बनाकर 666 कर दिया।[22] एक और ने ज़ोर दिया कि यूहन्ना डोमिशियन के वर्तमान सिक्कों पर शाही पद के सांख्यिक महत्व की गणना कर रहा था।[23]

प्रकाशितवाक्य का मुख्य उद्देश्य विश्वास के त्याग की भविष्यवाणी करने की बात मानने वालों का झुकाव पोपतन्त्र वाले रोम की ओर इशारा करने वाले समाधानों के प्रति है।[24] *Vicarius filii dei* (''परमेश्वर के पुत्र की जगह'') अभिव्यक्ति पोप के चुने जाने के समारोह में इस्तेमाल होने वाले मुकुट पर अंकित अक्षरों में मिलता है। इस वाक्यांश के अक्षरों को रोमी अंकों में बदलने पर इनका जोड़ 666 बनता है।[25]

1837 में कैथोलिक बिशप जॉन बी.परसैल से विवाद करते हुए अलेग्ज़ेंडर कैम्पबेल ने दिखाया था कि यूनानी में ''लातीनी राज्य'' वाक्यांश[26] का जोड़ 666 बनता है, जो उसने ज़ोर देकर कहा कि कैथोलिक चर्च के लिए ही हो सकता है।[27] परसैल, जो कल्पना और

रचनात्मकता से विहीन लग रहा था, कोई स्पष्ट विकल्प नहीं दे पाया।[28]

अब तक आप थोड़ा बहुत समझ चुके होंगे कि इस अंक को लगभग किसी भी व्यक्ति या वस्तु से जोड़ा जा सकता है।[29] द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान किसी ने A=101, B=102, C=103 आदि बनाते हुए ''खोज की'' कि ''666'' अडॉल्फ हिटलर का अंक है:[30]

H	=	107
i	=	108
t	=	119
l	=	111
e	=	104
r	=	117
जोड़	=	666

ह्यूगो मेकोर्ड ने लिखा है कि ''एक छात्र ने यह पता लगाया कि 'भाई कार्ल एच.मेकोर्ड' के नाम के अक्षरों का जोड़ 666 है।'' फिर मेकोर्ड ने यह उपहासजनक टिप्पणी जोड़ दी: ''उस छात्र पर पड़ा पशु का चिह्न 'F' था।''[31]

वास्तविक या काल्पनिक खलनायकों की सूची, जिनके नाम का जोड़ 666 बनाने की कोशिश की जाती है, खत्म नहीं होती। छोटी सी सूची इस प्रकार है: प्लैटो, अधिकतर सम्राट (उनमें से विशेषकर वे जो मसीही लोगों को सताने के लिए ज़िम्मेदार थे), हर पोप, कई बिशप और आर्क-बिशप, मोहम्मद और कई मुस्लिम अगुवे, अधिकतर प्रोस्टेंट सुधारक,[32] नेपोलियन बोनापार्ट, ओलिवर क्रॉमवैल, हिडेकी टोज़ो और बेनिटो मुसोलिनी (हिटलर के अलावा), जोसेफ स्टैलिन, कार्ल मार्क्स, रोनाल्ड रीगन, और हैनरी किसिंगर।[33] लोगों के अलावा, कइयों का यह मानना है कि यह अंक यूरोपीय बाजार, बैल्जियम के विशाल कम्प्यूटर या किसी काल्पनिक धमकी का है। जो उदाहरण मुझे मिले उनमें अधिक उपाय निकालने वाली वह प्रक्रिया लगी, जिसमें 666 *दोगुना* होकर कुक्लक्स क्लैन और इसके *दो* अगुवों के लिए हो।

फ्रैंक पैक की अगुवाई में जब मैंने प्रकाशितवाक्य पर क्लास में भाग लिया तो उन्होंने ''666'' का पुरस्कार देने के लिए हमारे अपने उम्मीदवारों की घोषणा के लिए चार हास्यास्पद ''नियम'' बताए:

1. यदि व्यक्ति के नाम का जोड़ पूरा न हो तो उसके पद को जोड़ लें।
2. यदि यूनानी में जोड़ पूरा न होता हो तो इब्रानी या लातीनी में कोशिश करें।
3. शब्द जोड़ या सभी अक्षरों के इस्तेमाल पर विशेष ध्यान न दें।
4. यदि दबाव पड़े तो कोई नाम खोज लें।[34]

यदि आपको अभी भी विश्वास नहीं है कि यह अंक किसी भी व्यक्ति (या वस्तु) का

हो सकता है, तो मुझे एक पल के लिए ''मूर्ख बनने'' की अनुमति दें: अमेरिका में कई छोटे बच्चों को ''बर्नी'' नामक एक बड़े बैंजनी डायनासोर को दिखाने वाला एक टेलीविज़न कार्यक्रम बहुत पसन्द है। बच्चे बर्नी का कार्यक्रम ही देखते हैं, जिस कारण बड़े लोग तंग आकर उनका मज़ाक उड़ाते हैं। हाल ही में मुझे इंटरनेट से यह संदेश मिला:

> 1. दिए गए CUTE PURPLE DINOSAUR से आरम्भ करें
> 2. जहां U आया है वहां V कर लें (जो लातीनी व्यक्ति का नाम है):
>
> CVTE PVRPLE DINOSAVR
>
> 3. सभी रोमी संख्याओं C; V; V; L; D; I; V को निकालें।
> 4. उन्हें अरबी मूल्यों में बदल लें:
>
> 100; 5; 5; 50; 500; 1; 5
>
> 5. जोड़ें: 666
>
> क्या यह संयोग है ? मुझे नहीं लगता। आपको सबूत मिल गया कि बर्नी ही वह पशु है।[35]

मैं जल्दी से बता दूं कि जो मैं कर रहा हूं, उसे लातीनी शब्द *reductio ad absurdum* अर्थात किसी उपसर्ग को असंगत बनाकर उसे गलत सिद्ध करना कहा जाता है। इससे जुड़ा एक नियम इस कहावत में मिलता है ''जो अत्यधिक साबित करता है वह कुछ साबित नहीं करता।'' विलियम हैंड्रिक्सन सही था जब उसने लिखा, ''अंकों के मूल्य नामों में जोड़कर व्याख्या करने की कोशिशें *कुछ नहीं* दे सकतीं, क्योंकि वे *सब कुछ* बताती हैं।''[36] ऐलन जॉनसन ने लिखा है:

> वर्षों से जिमेट्रिया ढंग से पैदा हुई निरी असहमति और उलझन से बहुत पहले कलीसिया को चौकस कर दिया जाना चाहिए था कि यह गलत चल रही है। ... यदि यूहन्ना विश्वासियों को उजाला करने की कोशिश कर रहा था कि वे उस पशु के छल को समझ जाएं और पशु और उस के पीछे चलने वालों से मेमने और उसके पीछे चलने वालों का अन्तर कर सकें (14:1 से) यानी यदि वह हमें जिमेट्रिया खेल खिलाना चाहता था तो वह स्पष्ट रूप से असफल हो गया।[37]

सुसंगत ढंग

इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया में *जिमेट्रिया* की चर्चा करते हुए विलियम स्मिथ ने लिखा है, ''वचन में केवल एक ही स्पष्ट उदाहरण छह सौ छियासठ अर्थात पशु का अंक जो मनुष्य का अंक है [प्रकाशितवाक्य 13:18]।''[38] क्या आपको यह अजीब लगता है कि बहुत से लोग यह मानते हैं (स्मिथ के दावे के अनुसार) कि 13:18 से पहले, प्रकाशितवाक्य में दिए सभी अंकों की व्याख्या सांकेतिक अर्थ में होनी चाहिए, और 13:18 के बाद सभी अंकों की व्याख्या सांकेतिक अर्थ में होनी चाहिए, परन्तु उस एक आयत में पवित्र आत्मा ने *जिमेट्रिया* खेल खेलने का निर्णय लिया? बाल्डिंगर ने ध्यान

दिलाया कि ''अपोकलिप्स में लेखक और कहीं भी ऐसी संख्या का इस्तेमाल नहीं करता, जिसका अर्थ ऐसी गणितीय प्रक्रिया से मिलता हो; और हर जगह अंकों का अर्थ सांकेतिक ही है।''[39] स्पष्ट प्रश्न यह है कि क्या सुसंगत होने के लिए ''666'' का अर्थ भी सांकेतिक नहीं होना चाहिए?

''666'' का सांकेतिक अर्थ क्या *है*? *पि*छले पाठ में हमने इस पर बात की थी, परन्तु उस पर फिर विचार करना सही रहेगा: हमने ज़ोर दिया था कि छह, सात से एक कम है और ''सात'' पूर्णता को दर्शाता है, इसलिए ''छह'' *अपूर्णता* या बुराई का प्रतीक है। ''छह'' के लिए यूनानी शब्द *hex* है, जिसका अर्थ ''बुरी बात, शाप'' हो चला है। कई यहूदियों की नज़र में ''छह'' वैसा ही था, जैसा आज कइयों के लिए ''तेरह'' का अंक है। फिर, क्योंकि छह लगभग सात ही है इसलिए ''छह'' कहने का अर्थ *छल* है। अन्ततः, ''छह'' *विनाश* की भविष्यवाणी है। ये सभी अवधारणाएं ''छह'' अंक के सांकेतिक महत्व में थीं।

दोहराने से उन अवधारणाओं को बढ़ाते हुए हम ''666'' पर आते हैं। मुल्होलैंड का अवलोकन है कि ''दर्शन में तीन त्रय हैं: पवित्र, पवित्र, पवित्र (4:8); हाय, हाय, हाय (8:13); और छह, छह, छह (13:18)। ... इसलिए पशु का स्वभाव 'पूर्ण' (तीन) अपूर्णता (छह) है।''[40] बाल्डिंगर ने इसे संक्षेप में रखा: ''छह! छह! छह! यह भयभीत भविष्य की गम्भीर घोषणा की तरह है।''[41]

सारांश

आरम्भिक मसीही लोगों के लिए इन सबका क्या अर्थ था? उतना ही धमकी भरा जितना रोमी साम्राज्य होगा, सम्राट की पूजा कराने वाले अधिकारी एक ऐसी पद्धति के प्रतिनिधि थे, जो *नाकाम* होने को थी। वही प्रासंगिकता आज बनाई जा सकती है कि परमेश्वर का विरोध करने वाला चाहे कोई भी हो अन्ततः वह नाकाम ही होगा। परमेश्वर ने इसकी गारंटी एक बार नहीं, बल्कि तीन बार दी है! इसी कारण होमेर हेली ने लिखा है:

> ... पशु के अंक, छह, छह, छह, मनुष्य की हर पद्धति तथा परमेश्वर और मसीह के विरोध के सभी प्रयासों की पूर्ण और सम्पूर्ण असफलता का संकेत है और अन्ततः वे पूर्ण रूप से पराजित व असफल होंगे। यह व्याख्या प्रकाशितवाक्य के विषय वस्तु तथा उद्देश्य से मेल खाती है।[42]

इसी में शांति है; इसी में सामर्थ है; ''इसी में ज्ञान है'' (13:18क)।

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट

एल्बर्ट बाल्डिंगर ने प्रकाशितवाक्य 13:18 पर अपने पाठ को ''प्रकाशितवाक्य का गणित'' नाम दिया।

टिप्पणियां

[1]विलियम बार्कले, द *बुक ऑफ़ रैवलेशन,* अंक 2, संशो. संस्क., द डेली स्डडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1976), 100. [2]एम. रॉबर्ट मुल्होलैंड जूनि., *होली लिविंग इन एन अनहोली वर्ड: रैवलेशन,* द फ्रांसिस एसबरी प्रैस कमैंट्री सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: फ्रांसिस एसबरी प्रैस, जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1990), 238. [3]प्रकाशितवाक्य के सतत ऐतिहासिक ढंग के सम्बन्ध में अपनी याद को ताज़ा करने के लिए, *टुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में पाठ ''अच्छी शुरुआत, मानो आधा काम हो गया'' देखें। [4]इस ढंग के प्रति अन्य आपत्तियों के लिए, पिछली टिप्पणी में दिया गया पाठ देखें। [5]इस विचार को मानने वाले अन्य लोगों का विश्वास है कि ''सिग्मा'' ''उद्धार'' के लिए यूनानी शब्द के पहले अक्षर के लिए है। [6]पिछले पाठ में 13:18 पर टिप्पणियां देखें। [7]*द इंटरनेशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया, संस्क. जेम्स ऑर* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम. बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग क., 1960), 4:2162 में विलियम टेलर, स्मिथ, ''नंबर्स।'' [8]मूलतः, ''अल्फा'' (α) से ''अयोटा'' (ι) 1 से 10 के लिए था, फिर ''कैपा'' (κ) 20 था, ''लैंब्डा'' (λ) 30 था, ''म्यू'' (μ) 40 था और इसी प्रकार आगे। ''रो'' (ρ) 100 था, ''सिग्मा'' (σ, शब्द के बीच में ''S'' का रूप) 200 था, ''टाऊ'' (τ) 300 था और इसी प्रकार आगे। इस प्रबन्ध के अपवाद ये थे कि शब्दों के अन्त में इस्तेमाल किया गया ''सिग्मा'' रूप (ς) सूची में 6 का काम करने के लिए डाला गया और विशेष प्रतीकों का इस्तेमाल 90 और 900 के लिए किया गया। [9]आज भी कई बार तिथि रोमी अंकों में लिखी जाती है, और कई घड़ियों के नंबर रोमी अंकों में ही होते हैं। [10]सिल्बीलाइन ओरेकल्स प्राचीन यूनानी देववाणी की नकल में रोमी साम्राज्य के समय लिखे गए (परेमश्वर की प्रेरणा रहित) अपोकलिप्टिक लेखों का संग्रह है।

[11]यद्यपि शब्द के अन्त में इस्तेमाल किया गया ''सिग्मा'' का रूप ς है, परन्तु सिल्बीलाइन ओरेकल्स में यहां जान-बूझकर बीच वाला ''सिग्मा'' (σ) दोहराया गया। ς जिसका इस्तेमाल किया जाना चाहिए था, ''6'' होता। [12]कई टीकाकारों द्वारा दिया जाने वाला उदाहरण पोंपे के खण्डहरों में दीवार पर लिखी यह बात है, ''मुझे उससे प्रेम है, जिसका अंक 545 है।'' लेखक इस प्रकार अपना प्रेम किसी विशेष स्त्री पर जताता है, जबकि इसके साथ ही वह उसका नाम उनसे जो उसे नहीं जानते छिपाना चाहता है। [13]पोलीकार्प का शिष्य इरेनियुस (लगभग 140-202 ईस्वी), स्मुरना की कलीसिया का एक अगुआ था। पोलीकार्प और स्मुरने की कलीसिया पर जानकारी के लिए *टुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में पाठ ''निर्धन कलीसिया जो धनी थी'' में देखें। इरेनियुस के ''666'' के हवाले उसके काम *अगेंस्ट हेयरसीज़* (5.30.3) में मिलते हैं। *अगेंस्ट हेयरसीज़* नॉस्टिक गुटों की व्याख्या और उन्हें उत्तर है। नॉस्टिकवाद पर चर्चा के लिए *टुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में पृष्ठ 127 पर देखें। (विशेषकर उस पाठ में टिप्पणी 22 की समीक्षा करें।) [14]कुछ लोग इसका अर्थ रोमी साम्राज्य लेते हैं, क्योंकि रोमियों की भाषा लातीनी थी। अन्य इसे रोम के सम्राट के बजाय लेटियुम के आरम्भिक राजा की बात कहते हैं। कुछ इस तथ्य के बावजूद कि ऐसा अर्थ इरेनियुस के लिए नहीं होगा, इसे कैथोलिकवाद पर लागू करते हैं। [15]टाइटस पर जानकारी के लिए *टुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पृष्ठ 59 पर देखें। टाइटस ने स्वयं यहूदियों को सताया था, परन्तु उसके भाई डोमिशियन ने मसीही लोगों को सताया था। कइयों का मानना है कि ''टाइटस'' एक पारिवारिक नाम रहा हो सकता है। [16]हैनरी बी. स्वेट, द *अपोकलिप्स ऑफ़ सेंट जॉन* (कैम्ब्रिज: मैकमिलन कं., 1908; रीप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस कं., तिथि नहीं), 175 में उद्धृत। [17]इब्रानी वर्णमाला में मात्राएं नहीं होतीं। इस कारण मात्राओं को शून्य के बराबर लिखा जाएगा। ''o'' अपवाद है क्योंकि यह ''वाव'' के ऊपर चिह्न लगाकर बनता है, जो 6 के बराबर है। [18]यह व्याख्या इस विचार से जुड़ सकती है कि पशु ''नीरो का नया रूप'' डोमिशियन था। [19]कई लोग इसका उत्तर यह ध्यान दिलाते हुए देते हैं कि अर्थ को नकारने के लिए रोमी अधिकारियों के लिए इब्रानी शब्द का इस्तेमाल कठिन होगा, क्योंकि उन्हें यूनानी तो आती थी, परन्तु इब्रानी नहीं। [20]जी. बी. केयर्ड, *ए कमैंट्री ऑन द रैवलेशन ऑफ़ सेंट जॉन द डिवाइन* (न्यू यार्क: हार्पर एंड रोअ, 1966), 175.

[21]लियोन मौरिस, *रैवलेशन,* संशो.संस्क. द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1987), 38-39. [22]सूची को ''मेल खाता'' बनाने के लिए कोई और स्पष्ट कारण न होने के कारण लेखक ने ऐसा गलबा को शामिल कर लिया, परन्तु ओथो तथा विटेलियुस को निकालकर किया। रोमी सम्राटों की सूची के लिए, *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में 56 से 59 पृष्ठों में देखें। [23]लेखक ने ऐसा डोमिशियन के पूरे पद को लेकर उसे यूनानी में बदलकर और फिर इस तथ्य के बावजूद कि उसके पद का यह रूप सिक्के के किसी ओर नहीं था, पांच शब्दों को संक्षिप्त करके किया। [24]ये भविष्यवाणी के पोपतंत्र होने के लिए ''लातीनी पुरुष'' जैसे शब्दों को लिया गया है। [25]रोमी संख्या से मेल न खाते अंकों वाले अक्षरों को नज़रअंदाज कर दिया जाता है और ''u'' की जगह ''v'' कर दिया जाता है। ऐसा ही खेल *theos eimi epi gaies* (''मैं पृथ्वी पर परमेश्वर हूं'') वाक्यांश का इस्तेमाल करते हुए यूनानी वर्णमाला के साथ खेला जाता है। [26]यूनानी में, यह *e Latine Basileia* शब्द होगा। पहली दो ''e'' ''ईटा'' (η) हैं, जिनमें प्रत्येक का मूल्य 8 है और अन्तिम ''e'' 5 के मूल्य वाला ''एप्सिलोन'' (ε) है। [27]यही खेल ''इटली की कलीसिया'' के अर्थ वाले शब्दों *ekklesia Italika* के साथ खेला जा सकता है। यदि आप इसे बढ़ाना चाहें तो आपको यह पता होना आवश्यक है कि ''लैंब्डा'' (λ) के बाद वाला ''e'' आठ मूल्य वाला ''ईटा'' (η) है, जबकि अन्य ''e'' ''एप्सिलोन'' (ε) हैं, जिनमें प्रत्येक का मूल्य पांच है। [28]देखें *ए डिबेट ऑन द रोमन कैथोलिक रिलिजन* (नैशविल्ले: मैक्विडी प्रिंटिंग कं., 1914), 287-88. [29]किसी ने पता लगाया है कि ''परमेश्वर का क्रोध'' (*orge theou*) 666 तक हो गया। *arnoume* शब्द लेकर एक और आ गया जो 666 में जुड़ जाता है। आरम्भ करने वाले का विचार था कि यह ''मैं इनकार करता हूं'' के लिए यूनानी शब्द का रूप *हो सकता* था और इसका अर्थ मसीह के नाम का इनकार करना *हो सकता* था। [30]निश्चय ही यूहन्ना ने इस पहेली के लिए अंग्रेज़ी का इस्तेमाल क्यों किया यह नहीं बताया गया, न ही यह कारण बताया गया कि "A" का मूल्य 1 के बजाय 101 क्यों होना चाहिए।

[31]नंबर देते हुए ''F'' का इस्तेमाल ''फेल'' दर्शाने के लिए होता है। याद रखें कि मेकोर्ड मज़ाक में लिख रहा था। [32]कैथोलिकों ने भी खेल खेला है। [33]यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि इनमें से अधिकतर ऐसे बिल्कुल नहीं हैं। यदि ''666'' किसी विशेष व्यक्ति के लिए था तो यह यूहन्ना के समय के पाठकों के सामान्य काल में किसी के लिए था। [34]फ्रैंक पैक, अप्रकाशित क्लास नोट्स, स्प्रिंग 1956. [35]लेखक अज्ञात, 7 मार्च 1998 को इंटरनेट से लिया गया। [36]विलियम हैंड्रिक्सन, *मोर दैन कंकरर्स* (गैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुकर हाउस, 1954), 273. [37]ऐलन जॉनसन, *रैवलेशन* द एक्सपोज़िटर'स बाइबल कमैंट्री, सामा. संस्क, फ्रैंक ई. गेबलेन (ग्रैड रैपिड्स, मिशिगन: रिजेंसी रेफरेंस लाइब्रेरी, जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1981), 12:534. [38]स्मिथ, 2162. [39]अल्बर्ट एच. बाल्डिंगर, *प्रीचिंग फ्रॉम रैवलेशन: टाइमली मैसेजिस फ़ॉर ट्रबल्ड हार्ट्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1960), 74. [40]मुल्होलैंड, 239.

[41]बाल्डिंगर, 75. [42]होमेर हेली, *रैवलेशन: एन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1979), 299.

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. क्या आपने ''666'' पर कभी कोई अजीब विचार सुना है?
2. पाठ के आरम्भ में दिए गए ''असामान्य'' ढंगों पर और उनमें से प्रत्येक से जुड़ी कुछ समस्याओं पर चर्चा करें।
3. यूहन्ना के समय में लोग अक्षरों को अंकों का नाम क्यों देते थे?
4. A=1, B=2, C=3 आदि का इस्तेमाल करते हुए, अपने नाम को अंकों में बदलें। अपना अंक क्लास में दूसरों को बताएं। क्या आपके अंक वाला कोई और भी है?
5. पाठ में सुझाव है कि नाम को संख्या में बदलना आसान है, परन्तु संख्या को किसी

विशेष नाम में बदलना कठिन है। ऐसा क्यों है ?

6. जिसे कई लोग ''यूहन्ना की पहेली'' कहते हैं, उसे सुलझाने का सबसे प्रसिद्ध ढंग क्या है ?
7. और क्या हल सुझाए गए हैं ?
8. क्या आप और कोई नाम, शब्द, पद या इनके जोड़ को बता सकते हैं, जिसका जोड़ 666 बनता हो ? (फ्रैंक पैक के चार ''नियम'' याद रखें।)
9. ''छह'' का सांकेतिक अर्थ क्या है ? इस अंक को तीन बार दोहराए जाने का क्या महत्व है ?
10. ''666'' की व्याख्या सांकेतिक रूप से करने पर पहली शताब्दी के मसीही लोगों के लिए क्या संदेश था ? आज हमारे लिए क्या संदेश है ?